Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

निराला: साहित्य के परशुराम

Dr. Raj Kamal Mishra*

Guest Secretary Research, Maharaj Vinayak Global University, Jaypur

सार – *सूर्यकांत त्रिपाठी निराला हिन्दी कविता के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माने जाते है। अपने समकालीन अन्य कवियों से अलग उन्होंने कविता में कल्पना का सहारा बहुत कम लिया है ओर यथार्थ को प्रमुखता से चित्रित किया है। वे हिन्दी में मुक्तछंद के प्रवर्तक भी माने जाते है। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की काव्यकला की सबसे बड़ी व्यिेषता है चित्रण कौशल। आंतरिक भाव हो या बाह्य जगत के दृश्य – 'रूप, संगीतात्मक ध्वनियाँ हो या रंग और गंध, सजीव चरित्र हों या प्राकृतिक द्रश्य, सभी अलग-अलग लगनेवाले तत्वों को घुला-मिलाकर निराला ऐसा जीवंत चित्र उपस्थित करते है कि पढ़ने वाला उन चित्रों के माध्यम से ही निराला के मर्म तक पहुँच सकता है। निराला के चित्रों में उनका भावबोध ही नहीं, उनका चिंतन भी समाहित रहता है। इसलिए उनकी बहुत सी कविताओं में दार्शनिक गहराई उत्पन्न हो जाती है। इस नए चित्रण- कौशल और दार्शनिक गहराई के कारण अक्सर निराला की कवितायें कुछ जटिल हो जाती है, जिसे न समझने के नाते विचारक लोग उन पर दुरूहता आदि का आरोप लगाते हैं। उनके किसान बोध ने ही उन्हें छायावाद की भूमि से आगे बढ़कर यथार्थवाद की नई भूमि निर्मित करने की प्रेरणा दी। विशेष स्थितियों, चरित्रों और द्रश्यों को देखते हुए उनके मर्म को पहचानना और उन विशिष्ट वस्तुओं को ही चित्रण का विषय बनाना, निराला के यथार्थवाद की एक उल्लेखनीय व्यिेषता हैं निराला पर अध्यात्मवाद और रहस्यवाद जैसी जीवन -विमुख प्रवृत्तियों का भी असर है।*

----------X----------

भूमिका

निराला की साहित्यिक पृष्ठभूमि के रूप में राष्ट्रीय नवजागरण का बहुत बड़ा योगदान रहा है। निराला का जन्म बंगाल की धरती पर हुआ था और बंगाल भारतीय राष्ट्रीय और सांस्कृतिक नवजागरण की जननी थी। अतः निराला का क्रांतिद्र्यी रचनाकार बन जाना अत्यंत स्वाभाविक था। रवीन्द्रनाथ और विवेकानंद उनके प्रेरणा स्रोत थे। इसी कारण राग और विराग जैसी विरूद्ध प्रवृत्ति के बीच सामंजस्य का संघर्ष उनके साहित्य में अनेक रूपों में परिलक्षित होता है। भारतीय अस्मिता की पुनः प्रतिष्ठा के लिए सूर्यकांत त्रिपाठी ने अनेक जागरण गीत लिखे, जिसमें भारतीय सांस्कृतिक गौरव को प्रकट करने और राष्ट्रीय सजगता लाने जैसा पुनीत कार्य किया गया।

स्वच्छंदता और क्रांति सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के साहित्यिक चेतना के प्रेरक तत्व थे। कवि की साहित्यिक पृष्ठभूमि की चेतना के रूप में पत्नी की प्रेरणा का भी महत्ती योगदान हैं। निष्कर्षतः निराला की साहित्य साधना देश, समाज और तत्कालीन संदर्भों की प्रेरणा और संघर्ष से प्रस्फुटित हुई हैं।

क्रांतिदर्शी कवि निराला के साहित्य में विविध विषयों की अभिव्यक्ति हुई है। प्रेम, शृंगार, क्रांति, राष्ट्र गौरव तथा मानवीयता जैसे तत्व निराला की कविताओं को एक उदात्त भावभूमि प्रदान करते हैं। निराला प्रयोगधर्मी कवि थे। इसी कारण उन्होंने काव्य जगत को भाव एवं शिल्प दोनों क्षेत्र में नवीनता प्रदान की।

1. **देश प्रेम और राष्ट्रीयता –** शेरों की माँद में आया है आज स्यार जागो फिर एक बार। जैसी काव्य पंक्तियो की रचना करने वाले कवि निराला की अनेक काव्य रचनाएँ देश प्रेम और राष्ट्रीयता की अमूल्य धरोहर हैं।

निराला जी की राष्ट्रीय भावना कहीं मातृभूमि वंदना, तो कहीं प्रकृति प्रेम और कहीं उद्बोधन गीत के रूप में प्रस्फुटित हुई है। कवि मातृभूमि के उद्धार में अपने समस्त स्वार्थों को बलि चढ़ा देना चाहता है

नर जीवन के स्वार्थ सकल,

बलि हों तेरे चरणों पर माँ।

www.ignited.in

2. **प्रकृति प्रेम देश प्रेम में तदाकार -** आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा हैं कि यदि किसी को अपने देश से प्रेम है तो उसे अपने देश के मनुष्य, पशु, पक्षी, लता, गुल्म, पेड़ पत्ते, कण, पर्वत, नदी, निर्झर सबसे प्रेम होगा। सचमुच देश प्रेम का आरंभ प्रकृति प्रेम से ही होता है। प्रकृति के माध्यम से ही तो व्यक्ति देश को महसूस कर पाता हैं।

3. **जागरण का स्वर-निराला की काव्य -** रचनाएँ जागरण से सीधा संबंध रखती हैं। कवि का नवजागरण विवकेधर्मिता से आलोकित और मानवीयता से पुष्ट प्रतीत होता है। यह कवि की जाग्रत चेतना का ही प्रतीक है कि उनका मन घोर संघर्ष और निराशा के क्षणों में भी नहीं थकता।

4. **ऐतिहासिक -** सांस्कृतिक कथ्यों और पत्रों द्वारा जागरण चेतना का प्रसार -आधुनिक भारतीय राष्ट्रीय नवजागरण के इतिहास में दो प्रमुख चेतना बलवती रही। पहली, ऐतिहासिक कथा की प्रेरणा, दूसरी सांस्कृतिक चेतना। निराला के कृतित्व में ऐतिहासिक सांस्कृतिक तथ्यों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ। कविवर निराला ने अपने काव्य के ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से भारतीय मानस को जगाने का प्रयास किया। कवि ने इतिहास को वर्तमान के संदर्भ में उपस्थित कर उसे प्रासंगिक बनाया। राम की शक्तिपूजा, तुलसीदास एवं महाराज शिवाजी के पत्र शीर्षक रचनाएँ ऐतिहासिक-सांस्कृतिक पात्रों के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण का एक अभियान प्रतीत होती हैं। निराला के ऐतिहासिक पात्र नवीनता, मौलिकता और जागरण की बात करते हैं। इस संदर्भ में राम की शक्ति पूजा में जाम्बवान का यह सन्देश महत्वपूर्ण है कि:

शक्ति की करो मौलिक कल्पना

क्रो मौलिक पूजन।

ठसी कविता के अंत में नायक पुरूषोत्तम राम के विजय संघर्ष के अंत में होगी जय होगी जय का उद्घोष राष्ट्रीय आंदोलन को आ्यान्वित करता है।

5. **काव्यानुभूति में विद्रोही की भावभूमि -** विद्रोही ही नवजागरण कालीन चेतना का केंद्रीय पक्ष था। निराला के जीवन में विरोध का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान रहा। वह विरोध से निर्मित भी हुआ और तमाम बाधाओं के मार्ग में विरोध की चट्टान बनकर खड़ा हो गया।

6. **मनुष्य के महत्व में आस्था -** भारतीय साहित्य और राजनीति के आधुनिक काल के केंद्र में आम जनता खड़ी दिखाई देती है। आम जनता अर्थात् साधारण मनुष्य। सर्वसाधारण की एकता से उपजी चेतना का नाम ही राष्ट्रीय जागरण है। साहित्य के क्षेत्र में यह पहला अवसर था, जब मनुष्य को केंद्रित कर रचनाएँ लिखी जाने लगीं। साहित्य में प्रस्तुत दैवी पात्र भी साधारण मनुष्य के गुणों अवगुणों से युक्त दिखाई पड़ते हैं। तभी तो पाठक उन ऐतिहासिक पौराणिक पात्रों में अपने युग के क्रांति नायक की छवि देख पाता है।

निराला: साहित्य के परशुराम

निराला ने केवल राष्ट्रीय आंदोलन के नवजागरण का बिगुल नहीं फूँका बल्कि कविता की दुनिया में भी नवीनता का समावेश किया। वे बँधी-बँधायी परिपाटी पर सुरक्षित चलने वाले साहित्यकार नहीं थे। अतः उनके काव्य रचना विधान में भी नवीन प्रयोग एवं प्रगति का निर्दशन होता है।

काव्य रूपों के नए आधार -निराला जैसे व्यक्तित्व को पाकर हिंदी साहित्य जगत जाग्रत और उन्नतिशील हो चला। काव्य रूपों के क्षेत्र में उनकी प्रयोगधर्मिता ने साहित्य जगत में संभावनाओं के नए द्वार खोले। काव्य रूपों के नवीन आधार को तीन दृष्टांतों से स्पष्ट किया जा रहा हैं।

1. लंबी कविता का रचना विधान -प्रस्तुत कविता मात्र 9-10 पृष्ठों की होते हुए भी महाकथात्मक गुणों से युक्त है। साथ ही साथ नाटकों की सी गतिमयता और सचित्रता कवि के अनूठे काव्य प्रयोग की सफल झाँकी है।

2. सरोज-स्मृति -पुत्री की मृत्युलीला को चित्रित करने वाला यह काव्य एक विशिष्ट शोक कविता है। इसमें पुत्री के यौवन का अन्कुठ चित्रण, श्रृंगार, परिस्थितिजन्य व्यंग्य और विराग की अनुपम प्रस्तुति हुई हैं।

3. तुसलीदास -सौ छंदों के भीतर भावना, चिंतन, कल्पना तथा अभिव्यक्ति का एक अद्वितीय प्रबंधात्मक काव्य है। छंद-विधान एवं भाषा प्रयोग भी इस कृति को विशिष्ट बना देते हैं।

छंदों के बंधन से कविता की मुक्ति -निराला एक विद्रोही कवि के रूप में जाने जाते है। वे काव्य की विषय -वस्तु मात्र में नवीनता का समावेश कर संतुष्ट हो जाने वाले कवि नहीं थे। उन्होंने राष्ट्रीय मुक्ति के साथ-साथ काव्य की शिल्पगत मुक्ति का प्रयास किया। उनका मानना था कि

www.ignited.in

मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है।

कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग होना है।

निराला ने अपनी क्रांतिधर्मिता को साहित्यिक स्वाधीनता के लिए अनिवार्य माना। इस तरह वे हिन्दी काव्य जगत में मुक्त छंद के प्रणेता सिद्ध हुए। मुक्त छंद में कविता का प्रवाह मुक्त और वेगमय हो गया।

काव्य भाषा

छायावादी कविता की भाषा योजना पर प्रकाय डालते हुए आलोचक नामवर सिंह ने लिखा है कि जो विचारों और भावों की दुनिया में रूढ़ियों को तोड़ने वाले हैं, वे भाषा के क्षेत्र में ही व्याकरण की रूढ़ियों में बँधकर कैसे चल सकते हैं ? वास्तव में निराला के संबंध में उपर्युक्त कथन अधिक समीचीन प्रतीत होता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने गद्य को कवियों की कसौटी माना है। निराला शुक्ल जी की इस चुनौती पर विजयप्राप्त साहित्यकार रहे हैं। उन्होंने गद्य के क्षेत्र में कहानी, उपन्यास, निबंध और संस्मरण लिखे। रचनाकार के गद्य में भारतीय समाज के दलित पक्ष की सच्ची छवि उभरकर सामने आयी है। कथा के साथ लेखक इस प्रकार संपृक्त हो जाता है कि रचना पात्र और लेखक का भेद ही मिट जाता है। इसीलिए उनकी कहानी किसी संस्मरण या रेखाचित्र भी प्रतीत होने लगती है। उदाहरणस्वरूप कुल्लीभाट नामक कृति में कथा, रेखाचित्र, संस्मरण और रिपोर्ताज सारी विधायें एक साथ प्रकट हो पड़ी हैं। उन्होंने अपनी पुस्तकों को भूमिकाओं में जो विचार रखे वह अपने आव में महत्वपूर्ण गद्य विधा का नमूना हैं। अतः निराला एक ऐसे गद्यकार हैं, जिनकी रचना में पाठक रमे बिना नहीं रह पाता।

नारी को विभिन्न स्थितियों, संघर्ष की प्रक्रिया एवं प्रस्थानबिन्दु आदि का विवेचन करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि हिन्दी कहानियों में नारी -संघर्ष को समझने से पहले इन बिन्दुओं पर विचार करना आवश्यक है क्योंकि प्राकृतिक रूप से स्त्री पुरूष की शारीरिक संरचना में अन्तर है। लेकिन उस अन्तर के मूल्यांकन का प्रयत्न सदा-सर्वदा सामाजिक सांस्कृतिक होता रहा है शारीरिक संरचना के आधार पर पुरूष का अपने आप को शक्तियाली मानना और स्त्री का अपने आप को दुर्बल अनुभव करना प्राकृतिक यथार्थ से अधिक मनोवैज्ञानिक स्थिति है इसी स्थिति ने समाज में पुरूष को प्राणी रूप में तथा स्त्री को नारी रूप में परिभाषित किया है परिणामतः स्त्री मानवीय अधिकारों से वंचित रही अर्थ्यास्त्र के लिए स्त्री के श्रम को सही तौर पर मूल्यांकित कर पाना एक जटिल समस्या रही है आर्थिक स्वतन्त्रता के नाम पर स्त्री समाज में पव्य वस्तु बनी है स्त्री की दार्शनिक स्थिति मुख्यतः उसकी ऐतिहासिक और सामाजिक स्थितियों के परिवर्तन के अनुपात में परिवर्तित होती रही है कभी उसे देवी या दासी, अन्या, शोषक-शोषित आदि सम्बोधनों से सम्बोधित किया गया।

निष्कर्ष

नैतिकता का आधार वैयक्तिक स्तर पर निर्मित होता है नैतिकता के मूल में औचत्य और अनौचित्य सम्बन्धी धारणायें होती है नारी की नैतिक स्थिति किसी विशिष्ट ऐतिहासिक पड़ाव पर उपर्युक्त धारणाओं द्वारा ही गढ़ी गई स्त्री एवं पुरूष के लिए भिन्न-भिन्न नैतिक मूल्य निर्धारित किए गये। संघर्ष, विद्रोह का एक प्रकार है संघर्ष विद्रोह को उसकी सफलता की ओर अग्रसर करता है क्रांति के लिए संघर्ष अनिवार्य होता है संघर्ष साध्य है क्रांति साधन है नारी संघर्ष का अर्थ समाज में मानवीय "अवसर प्राप्ति के लिए "तथा "अस्तित्व के लिए" लड़ना से है संघर्ष में दृष्टि होती है संघर्ष मानव के पक्ष में होता है।

अतः प्राकृतिक रूप से नारी की शारीरिक संरचना को सदा-सर्वदा सामाजिक -सांस्कृतिक बना कर उसकी मानसिकता को और भी दुर्बल किया गया है। आज की नारी जिसका विरोध कर रही है। उसने अपने अस्तित्व को पहचाना है और वह समाज में मानवीय व्यक्तितत्व के रूप में पहचान व अवसर प्राप्ति के लिए संघर्ष कर रही है।

संदर्भः

हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास - बच्चन सिंह

हिन्दी साहित्य एवं भाषा का इतिहास – डॉ. राम विलास गुप्त

हिन्दी साहित्य का इतिहास - श्याम चन्द्र कपूर

स्वतंत्रोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास - लक्ष्मी सागर

हिन्दी साहित्य की भूमिका - हज़ारी प्रसाद द्विवेदी

हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - बच्चन सिंह

www.ignited.in

छायावाद – डॉ. सुरेन्द्रनाथ सिंह

Corresponding Author

Dr. Raj Kamal Mishra*

Guest Secretary Research, Maharaj Vinayak Global University, Jaypur